



मुल्क राज आनंद और उनके यथार्थवादी दृष्टिकोण: अछूत और श्रमिक वर्ग की स्थिति

¹अनिल कुमार, ²डॉ. मिनेश जैन

¹शोधार्थी, ²पर्यवेक्षक

¹⁻²विभाग: हिन्दी, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार

मुल्क राज आनंद, भारतीय अंग्रेजी उपन्यास के प्रमुख संस्थापक लेखक हैं, जिन्होंने अपने समय की सामाजिक वास्तविकताओं को अपने लेखन के माध्यम से गहरे रूप से प्रदर्शित किया। उनके प्रमुख विषयों में दलितों और श्रमिक वर्ग का शोषण, उपनिवेशीकरण के प्रभाव, और भारतीय समाज में मौजूद सामाजिक अन्याय शामिल हैं। आनंद के उपन्यास अछूत (1935), कुली (1936), और टू लीक्स एंड ए बड (1937) में शोषित वर्ग के जीवन की जटिलताओं को प्रस्तुत किया गया है, जो उनके संघर्ष, शोषण और गरिमा की खोज को उजागर करते हैं। अपने लेखन के माध्यम से आनंद सामाजिक सुधार की आवश्यकता और जातिवाद के उन्मूलन की बात करते हैं। उनके लेखन पर मार्क्सवाद का प्रभाव है और वह निम्न वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति को गहराई से व्यक्त करते हैं। आनंद पूंजीवादी शोषण और अन्याय के खिलाफ खड़े होकर मानवता का पक्ष लेते हैं। यह शोध पत्र मुल्क राज आनंद के यथार्थवादी दृष्टिकोण, उनके द्वारा चित्रित अछूत और श्रमिक वर्ग की स्थिति और समाज में जागरूकता लाने की उनकी कोशिशों पर केंद्रित है।

मुख्य शब्द: मुल्क राज आनंद, सामाजिक यथार्थवाद, दलित, अछूत, जातिवाद, मार्क्सवाद, सामाजिक सुधार, श्रमिक वर्ग, शोषण, भारतीय अंग्रेजी साहित्य।

भूमिका

मुल्क राज आनंद, भारतीय अंग्रेजी उपन्यास के “सबसे महत्वपूर्ण संस्थापक पिता” थे। उनके पिता लाल चंदे ब्रिटिश भारतीय सेना में हेड क्लर्क थे। उनकी माँ ईश्वर कौर अशिक्षित थीं, लेकिन लोककथाओं में पारंगत थीं। कृष्ण, ईसा मसीह, गुरु नानक और आगा खान जैसे विविध देवताओं में उनकी गहरी आस्था थी और लगभग समान रूप से समर्पित थीं। अपनी माँ से उन्हें साथी मनुष्यों के प्रति गहरी करुणा विरासत में मिली थी। उनके पिता चाहते थे कि उनका बेटा प्रतिष्ठित सरकारी नौकरी पाने के लिए परीक्षाओं में उच्च स्थान प्राप्त करे।

आनंद ने खालसा कॉलेज, अमृतसर से शिक्षा प्राप्त की और पंजाब विश्वविद्यालय से बी.ए. ऑनर्स की उपाधि प्राप्त की। वे प्रोफेसर डावेस हिक्स के मार्गदर्शन में दर्शनशास्त्र में शोध के लिए लंदन गए। 1930 में, लॉक, बर्कले, ह्यूम और रसेल के विचारों पर उनके शोध प्रबंध के लिए उन्हें पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। चौदह साल की उम्र तक आनंद ने शेक्सपियर, डिकेंस और ठाकरे को पढ़ लिया था। आनंद के लेखन को प्रभावित करने वाली तीन घटनाएँ हैं, उनकी खूबसूरत चचेरी बहन कौशल्या की नौ साल की उम्र में मृत्यु, एक मुसलमान से दोस्ती करने के कारण उनकी चाची का समाज से बहिष्कार, और 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के दौरान कर्फ्यू तोड़ने के लिए पुलिस द्वारा उनकी गिरफ्तारी और बेंत की मार। इन अनुभवों से आनंद ने यह विचार विकसित किया कि धर्म सभी मानवीय समस्याओं का समाधान नहीं दे सकता। उन्होंने महसूस किया कि भारतीय समाज को सामाजिक बंधनों से मुक्त होना चाहिए। वह दृढ़ता से कहते हैं, “हम सबसे पहले अपनी क्षयग्रस्त सभ्यता में मानव समाज की बुराइयों का विरोध करने के



लिए बाध्य हैं। इसलिए आप एक ऐसी स्थिति का सामना कर रहे हैं जहाँ हर तरफ विरोध आवश्यक है – धार्मिक विरोध, आध्यात्मिक विरोध, सामाजिक विरोध, आदि।” (आनंद 110) आनंद एक परंपरा-बद्ध लोकाचार में रहे थे, जो अंधविश्वास, पाखंड और धार्मिकता के करीब था।

आनंद का इंग्लैंड प्रवास एक वैज्ञानिक दार्शनिक की सुंदर पुत्री, आइरीन के साथ उनकी मित्रता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। आइरीन ने उन्हें अपनी कहानी लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। मार्क्स के “लेटर्स ऑन इंडिया” पढ़ने से उनकी सोच में आमूल-चूल परिवर्तन आया। उनकी मार्क्सवादी शिक्षा ने निम्न और वंचितों के प्रति उनकी सहानुभूति को और बल दिया। वे डिकेंस, बाल्जाक, टॉल्स्टॉय, गोर्की, फ्लॉबर्ट और जोला की यथार्थवादी और प्रकृतिवादी परंपरा से प्रभावित हैं। इंग्लैंड में, आनंद ने देखा कि वहाँ के मजदूरों और अन्य निम्न-वर्गीय कर्मचारियों में आत्म-सम्मान और गरिमा की भावना थी, जो भारत में उनके समकक्षों को पूरी तरह से नकार दी गई थी। वे लिखते हैं:

... मैं उनकी अनोखी गरिमा और आत्म-सम्मान से प्रभावित हुआ था।

भारत के कुलियों की तुलना में यहाँ कुली, सफाई कर्मचारी और अन्य श्रमिक जिस सम्मान के साथ व्यवहार करते हैं... मैं इस बात की प्रशंसा करता हूँ कि अप्रिय कार्य करने वाले लोग किस प्रकार श्रम की गरिमा को पहचानते हैं। (59–60)

आनंद पूंजीपति वर्ग के पाखंड को उजागर करने की कोशिश करते हैं। वे बताते हैं:

मैं उन मनुष्यों के बारे में लिखना चाहता था जिन्हें मनुष्य के रूप में जाना या पहचाना ही नहीं गया था, या जिन्हें समाज में स्वीकार नहीं किया गया था – जैसे कि बहिष्कृत लोग... सतह के नीचे जाकर मनुष्य द्वारा मनुष्य के लिए बनाए गए विभिन्न नरकों में जाकर, जहाँ कभी-कभार स्वर्ग की एक झलक मनचाही छवि के रूप में दिखाई देती थी।

विदेश प्रवास के दौरान, वे टी.एस.एलियट, डी.एच.लॉरेंस, ई.एम.फोर्स्टर, डायलन थॉमस, लोव्स डिकिंसन, एरिक गिल और आनंद कुमारस्वामी जैसे महान लेखकों के निकट संपर्क में आए। ये संगति आनंद के लिए बहुमूल्य साबित हुई। आनंद के उपन्यासों की एक प्रमुख आलोचक, प्रेमिला पॉल इस प्रकार टिप्पणी करती हैं:

...विभिन्न मानवीय गतिविधियों में उनकी भागीदारी, तथा नृत्य, नाट्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला जैसी ललित कलाओं का गहन ज्ञान, तथा सबसे बढ़कर, मानवीय गतिविधियों के प्रति उनकी उत्कट प्रतिबद्धता ने उन्हें विश्व स्तर पर एक विशिष्ट व्यक्ति बना दिया है। (5)

प्रगतिशील लेखक आंदोलन का भी आनंद के लेखन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इन लेखकों ने उन्नीसवीं सदी के रूसी और

फ्रांसीसी लेखकों ने समकालीन भारतीय समाज की रुग्णता और कुरूपता का भी प्रतिनिधित्व किया। आनंद अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जनमानस की अंतरात्मा को पुनर्जीवित करने का प्रयास करते हैं:

भारत जैसे पतनशील समाज में, हमें नवीनीकरण की आवश्यकता है। नवीनीकरण, कैसे? हमारे जीवन पर हावी बर्बर तत्वों का त्याग करके, बर्बरता जो खुद को लाभ की संस्कृति के रूप में प्रस्तुत करती है ...,। हर हफ्ते हम बिहार में अत्याचारों के बारे में सुनते हैं। लाखों अछूतों को आज भी कुएँ के पास जाने की अनुमति नहीं है। औरंगाबाद विश्वविद्यालय खुद को डॉ. आंबेडकर के नाम पर नहीं जाने देगा।

1932 में महात्मा गांधी के साथ साबरमती आश्रम में मुल्क राज आनंद के प्रवास ने अछूतों, किसानों और गरीब मजदूरों के शोषण के प्रति उनकी चेतना को और प्रखर किया। आनंद की अपने आसपास के शोषण के प्रति जागरूकता पर गांधी के प्रभाव के बारे में जाने-माने आलोचक अंबुज कुमार शर्मा बताते हैं:

आनंद न केवल सामान्य रूप से हरिजनों के सामाजिक शोषण की गहरी और सहानुभूतिपूर्ण समझ हासिल



कर सके दृ एक ऐसा शोषण जो पूंजीवादी शोषक अंग्रेजों में अंतर्निहित था।

आनंद ने गांधीजी से ईमानदारी, सच्चाई और सादगी सीखी। वे लिखते हैं: “इससे पहले कि मैं और उपन्यास लिखूँ, महात्मा ने मुझे लोगों के पास भेजा। उसी समय से, मानवीय दुर्दशा के प्रति मेरा विरोध .., आत्म-चेतन हो गया।” (20) आनंद को एहसास हुआ कि वे अकेले खड़े होकर आकाश की ओर नहीं देख सकते। उन्हें उपेक्षितों के लिए खिना था।

कठिन परिश्रम, जबरन बच्चे पैदा करने और पतियों की मार से, नंगे बच्चों से, फूले हुए पेट और बड़ी आँखों से, भीख माँगते भिखारियों से, मेरी विधवा चाचीओं से, मेरे शराबी चाचाओं से, वीर सिपाही से, पठान सीमावर्ती सैनिकों से, जो फेरुंगियों से भयभीत हैं, लेकिन बंदूकें लेकर अवज्ञा कर रहे हैं

आनंद को प्रभावित करने वाले भारतीय रचनात्मक लेखक टैगोर, प्रेमचंद और शरतचंद्र हैं। टैगोर के विश्व बंधुत्व के विचार, प्रेमचंद की वंचितों के प्रति करुणा और शरतचंद्र का विनम्र लोगों के प्रति उदार हृदय के प्रति सम्मान, आनंद के लेखन में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। आनंद ने इन लेखकों की मानवतावादी परंपरा को आगे बढ़ाया है। आनंद का लेखन उनके आसपास के जीवन के उनके गहन अवलोकन का परिणाम है। एक ऐसे परिवार में जन्म जो धनी नहीं था, फिर भी गरीबी में भी नहीं था, उनके माता-पिता की धार्मिक असहिष्णुता और उनके पिता की स्थानान्तरणीय नौकरी के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा ने उन्हें आम आदमी के जीवन की दुर्लभ अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम बनाया। इन सभी कारकों ने न केवल उनके जीवन पर, बल्कि उनके लेखन पर भी गहरा प्रभाव डाला। मुल्क राज आनंद पर अपने अध्ययन में, के.एन. सिन्हा लिखते हैं: “मुल्क राज आनंद, एक व्यक्ति, के विश्वास, जाने-अनजाने लेखक के विचारों को प्रभावित करते हैं और उनके सौंदर्यशास्त्र को प्रभावित करते हैं।” अपने बचपन के दौरान, आनंद अछूतों, कुलियों और गरीब किसानों के बच्चों की संगति में रहे थे। उनके प्रति उनके मन में कोमलता और सहानुभूति की भावना विकसित हो गई थी। के.आर. श्रीनिवास अयंगर ने ठीक ही कहा है:

मुल्क राज आनंद बचपन में ही लोगों के बीच घुल-मिल गए थे।

अपने पिता की रेजिमेंट से जुड़े सफाई कर्मचारियों के बच्चों के साथ, और जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर ऐसे संबंध उनके बचपन और युवावस्था के दौरान भी जारी रहे।

उनके उपन्यासों में चित्रित अधिकांश नायक वास्तविक पात्र हैं जिनसे आनंद की मुलाकात उनके बचपन और किशोरावस्था में हुई थी। आनंद स्वीकार करते हैं:

सभी नायक... मुझे प्रिय थे, क्योंकि वे उन वास्तविक लोगों के प्रतिबिंब थे जिन्हें मैं अपने बचपन और युवावस्था के दौरान जानता था... वे मेरे मांस के मांस और मेरे खून के खून थे, और मुझे उसी तरह से प्रभावित करते थे जिस तरह से कुछ मनुष्य एक कलाकार की आत्मा को प्रभावित करते हैं।

आनंद का मानना है कि एक रचनात्मक लेखक का काम हमेशा एक मिशन से प्रेरित होता है, शोषण, पाखंड, क्रूरता और असंवेदनशीलता की सशक्त निंदा का। वह दृढ़ता से कहते हैं: “इस प्रकार हर अपमान, हर अपमान, हर वंचना, हर गरिमा ह्रास का विरोध किया जाना चाहिए।” कलाकार को प्रेम और करुणा के मूल तत्वों की याचना करनी चाहिए। उपन्यासकार, मनुष्य की नियति की समस्या की व्याख्या करके, जीवन के परम सत्य को उजागर करने का प्रयास करता है। कलाकार की असली परीक्षा लेखक की अपने समग्र परिप्रेक्ष्य, दर्शन या दृष्टिकोण के प्रति ईमानदारी में निहित है, वह संवेदनशीलता जिसके द्वारा लेखक दूसरों को चेतना के नवीनीकरण, शब्दों को भविष्यवाणी में रूपांतरित करने की ओर ले जाता है, एक लेखक की कल्पनाशील तीव्रता जो कच्चे माल को कला में रूपांतरित करती है। आनंद का उद्देश्य “अपना संदेश पहुँचाना” है।



आनंद के लिए कला मानवतावाद का एक साधन है और इसमें पर्याप्त सोये हुए इंसानों को जगाने की शक्ति। वह भारतीय समाज में जाति व्यवस्था, वर्ग संरचना, धर्म, शिक्षा और महिलाओं की स्थिति जैसे विषयों से निपटते हैं, वह सामाजिक बुराइयों और परंपरा से ग्रस्त समाज का विरोध करके अपने सामाजिक मानवतावाद को प्रकट करते हैं। वह सभी प्रकार के शोषण से नफरत करते हैं और मानव विरोधी ताकतों का विरोध करते हैं। पॉल ब्रायन उन्हें “एक्टिविस्ट लेखक” कहते हैं। मुल्क राज आनंद के उपन्यासों का केंद्रीय विषय सभी तरफ से मानवीय विरोध है, “विरोध ..., और सहानुभूति ..., और करुणा।” इस संबंध में, प्रेमिला पॉल उनकी तुलना चार्ल्स डिकेंस से करती हैं, “आनंद सामाजिक बुराइयों के अस्तित्व के प्रति अपनी अति-संवेदनशीलता में डिकेंसियन हैं।” आनंद साहित्य में चित्रित सामाजिक वास्तविकता से संतुष्ट नहीं हैं। उनका मानना है कि अगर इंसान ठान ले तो वह अपनी नियति बदल सकता है।

आनंद के लिए, कला केवल कला के लिए नहीं है। यह जीवन के लिए है और इसे आधुनिक मनुष्य तक कुछ संदेश अवश्य पहुँचाना चाहिए। यह नैतिक उद्देश्य उनके उपन्यासों का एक अनिवार्य अंग है। उन्हें इस बात का खेद है कि उनके अधिकांश आलोचकों ने यह नहीं देखा कि उनका उपन्यास निम्नतम स्तर के जीवन की विवशताओं से उपजा है। उन्होंने उपेक्षित लोगों के त्रासद-हास्य को बार-बार दोहराया है। एक लेखक के रूप में उन्होंने पहला “सचेत विरोध” (अग्निहोत्री 19) तब किया जब वे ब्लूमसबरी से आलोचक सैकविले वेस्ट की यह घोषणा सुनने के बाद लौटे कि गरीबों के बारे में कोई त्रासद उपन्यास नहीं लिखा जा सकता। एक प्रगतिशील लेखक के रूप में, वे समाजवादी आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध हैं। वे सामाजिक क्रांति के सिद्धांत और समाज के समाजवादी स्वरूप में गहरी आस्था के साथ “प्रतिबद्धता के बोझ” तले कड़ी मेहनत करते हैं। वे नैतिकता और सौंदर्य के कलात्मक संश्लेषण में विश्वास करते हैं। आनंद नैतिकता और सौंदर्य के बीच मनमाने भेद को नजरअंदाज करते हैं और वे कला को एक साथ उपयोगी और

भावपूर्ण अभिनय। वह सत्य और समकालीन यथार्थ की सच्ची व्याख्या करते हैं। वह बेहतर कल के लिए बदलाव के लिए प्रतिबद्ध हैं। वरिष्ठ शिक्षाविद्, ए.जी.खान, आनंद को भारत में अंग्रेजी में भारतीय कथा साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण लेखक मानते हैं।

छह दशकों तक चली उनकी रचनाएँ नए लेखकों को प्रेरित करती रहेंगी। वंचितों और दलितों के प्रति उनकी चिंता असीम थी। पूँजीवादी दुनिया और जनता का शोषण करने वाली साम्राज्यवादी ताकतों की उनकी समझ गहन थी।

आनंद को प्रचारक कहे जाने पर कोई आश्चर्य नहीं होता। वह प्रचार को किसी भी मानवीय परिवेश में जीवन का अर्थ खोजने का एक प्रयास मानते हैं। आनंद मनुष्य की समस्याओं का असली कारण स्वयं मनुष्य में, उसके स्वार्थ और कोमलता की उसकी अक्षमता में पाते हैं। मनुष्य-निर्मित अनेक बाधाएँ मनुष्य के मनुष्य के साथ मुक्त संवाद में बाधा डालती हैं:

वह बर्बरता और क्रूरता जिसके साथ मनुष्यों ने लाखों युद्ध किए, और वह घृणा जिसके माध्यम से लोग एक-दूसरे से पीड़ा प्राप्त करते हैं, वह भय जो शिकारी अवस्था एक अंतर्निहित वास्तविकता के रूप में संपूर्ण विविधता में लाती है, मनुष्य को अमानवीयता की ओर ले जाती है।

आनंद मनुष्य को संसार का निर्माता और विघ्नकर्ता कहते हैं। वे मनुष्य के पक्ष में सभी संस्थाओं को अस्वीकार करते हैं। उन्हें “मनुष्य की क्षमता” में विश्वास है। (सिंह 39) वे मनुष्य को अपने भाग्य का निर्माता कहते हैं। मनुष्य स्वयं को बनाता और बिगाड़ता है। उनका मानना है कि मनुष्य स्वयं को एक नए, विस्तारित ब्रह्मांड में ढाल लेता है। उनका मानना है कि भले ही लेखक हर आँख से आँसू नहीं पोंछ सकता, लेकिन वह “लोगों को जगाने के लिए हजारों चीखें जरूर निकाल सकता है।”



परम निद्रा के भार से।”

मुल्क राज आनंद ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष खंडेला में बिताए, जहाँ उनकी जमीन-जायदाद उनके द्वारा स्थापित एक धर्मार्थ ट्रस्ट, सर्वोदय सभा, के नाम पर सामाजिक और मानवीय कार्यों के लिए दान कर दी गई है। बेहतर स्वास्थ्य सेवा के लिए मुंबई या दिल्ली में अपना जीवन बिताने के बजाय, वे मजदूर वर्ग के करीब गए और खंडेला के कुछ गरीब आवासीय श्रमिकों के साथ रहे। इससे पता चलता है कि आनंद ने न केवल अपने उपन्यासों के माध्यम से अपने दर्शन का प्रचार किया, बल्कि अपने जीवन में उसका व्यावहारिक रूप से पालन भी किया। वे एक प्रतिबद्ध व्यक्ति हैं।

“दलित चेतना” नामक अध्याय में आनंद के तीन उपन्यास, अनटचेबल (1935), कुली (1936), टू लीक्स एंड ए बड (1937), द लैमेंट ऑन द डेथ ऑफ ए मास्टर ऑफ आर्ट्स (1938) शामिल हैं, जो दलितों के बारे में उनके दृष्टिकोण, अनटचेबल (1935), कुली (1936), टू लीक्स एंड ए बड (1937), द लैमेंट ऑन द डेथ ऑफ ए मास्टर ऑफ आर्ट्स (1938), द विलेज (1939), अक्रॉस द ब्लैक वाटर्स (1941), द स्वीड एंड द सिकल (1942), सेवन समर्स (1951), मॉर्निंग फेस (1970), कन्फेशन ऑफ ए लवर (1976), द बिग हार्ट (1945), प्राइवेट लाइफ ऑफ एन इंडियन प्रिंस (1953), गौरी (1960), द रोड (1963) और द डेथ ऑफ ए हीरो (1964) को दर्शाते हैं।

अछूत (1935) उपन्यास जातिवाद और सामाजिक असमानता के बारे में गहरे सवाल उठाता है, खासकर उन लोगों के संदर्भ में जो समाज के सबसे निचले तबके से आते हैं। यह उपन्यास दर्शाता है कि अछूतों को हर कदम पर दुख, गरीबी, शोषण और अपमान का सामना करना पड़ता है। यह उन लोगों के लिए समानता की मांग करता है जो जातिवाद के कारण उत्पीड़ित होते हैं। लेखक मुल्कराज आनंद बचपन में अछूत जाति के अपने दोस्तों के काफी करीब थे, और यह अनुभव उनके लेखन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना। उपन्यास को पहले उन्नीस प्रकाशकों ने अस्वीकार कर दिया था, लेकिन अंततः विशांत बुक्स ने इसे स्वीकार किया, इस शर्त पर कि प्रसिद्ध लेखक ई.एम. फॉरेस्टर इसे ‘गंदा’ कहे जाने से बचाने के लिए एक भूमिका लिखेंगे। फॉरेस्टर की प्रस्तावना के साथ, इस पुस्तक को वैश्विक स्तर पर अपार सफलता मिली और इसका कई भाषाओं में अनुवाद हुआ। ‘अनटचेबल’ की लोकप्रियता इस बात से स्पष्ट है कि इस पर आधारित नाटक का मंचन लंदन और ब्रिटेन के विभिन्न प्रांतों में किया गया, जहां चार महीने तक दर्शक खचाखच भरे रहते थे।

आनंद का उद्देश्य इस उपन्यास के माध्यम से पाठकों का ध्यान भारतीय समाज के उन बहिष्कृत वर्गों की दयनीय स्थिति की ओर आकर्षित करना था, जिनका जीवन जातिवाद और भेदभाव से प्रभावित है।

उपन्यास बखा नामक एक सफाई कर्मचारी के जीवन में एक दिन में घटित घटनाओं का वर्णन करता है। उसका दिन उसके पिता की आलस्य के लिए डॉट से शुरू होता है: “उठ, अरे, बख्खा, अरे सुअर के बच्चे।” (अछूत 15) उठते ही बखा बैरक में शौचालयों की एक कतार साफ करने चला जाता है और हवलदार चरत सिंह के इस वादे से प्रेरित मुस्कान के साथ लौटता है कि वह उसे दोपहर में एक नई हॉकी स्टिक देगा। पुराने और फटे हुए यूरोपीय कपड़े पहने, गोला-बारूद वाले जूते पहने, जो उसे ब्रिटिश सैनिकों ने दिए थे, बखा को लगता है कि वह एक साहब जैसा दिख रहा है और वह बहुत खुश होता है। एक हाथ में टोकरी और दूसरे हाथ में झाड़ू लिए, वह गलियों की सफाई के बदले में कुछ फेंका हुआ खाना लेने शहर की ओर निकल पड़ता है। जैसे-जैसे वह कस्बे से गुजरता है, बाजार की रौनक और मनोरम दृश्य उसे रोमांचित करते हैं और वह रेजिमेंटल हेड क्लर्क के बेटे के साथ अपनी अंग्रेजी की पढ़ाई कैसे शुरू करेगा, इस बारे में अपने मन में खो जाता है। तभी अनजाने में वह वहाँ से गुजर रहे एक हिंदू व्यापारी को छू लेता है और ‘छूए हुए’ व्यापारी के क्रोध का शिकार हो जाता है और इस तरह पूरी तरह से अन्याय का शिकार बन



जाता है। उसके लिए बखा पर भीड़ टूट पड़ती है, उसे गालियाँ दी जाती हैं और थप्पड़ मारे जाते हैं। उस पर बेबाकी से तमाम गालियाँ बरसाई जाती हैं: “सूअर, तूने चिल्लाकर मुझे अपने आने की चेतावनी क्यों नहीं दी?” बखा से नजरें मिलते ही वह चिल्लाया। ‘क्या तुझे पता नहीं, रे कमीने, कि तुझे मुझे छूना नहीं चाहिए।’”

पीढ़ियों और सदियों की अधीनता की नवीनतम शिक्षा उसकी आत्मा में सुलगते स्वाभाविक क्रोध को विनम्रता में बदल देती है, और वह अपने रास्ते पर फिर से चल पड़ता है, अब चिल्लाता है, “पोश, दूर रहो, पॉश, सफाईकर्मी आ रहा है, पॉश, पॉश, सफाईकर्मी आ रहा है।” जिस विनम्रता ने उसे भीड़ के सामने वशीभूत कर लिया था, वह उसके हृदय के रक्त प्रवाह को रोकने में विफल हो जाती है, हालाँकि वह अब बाहरी रूप से शांत है, और सावधानी से चलते हुए, उस अपमान पर विचार करता है जो उसने जीवन भर चखा है और अभी एक बार फिर चखा है।

बड़ी निराशा के साथ, बखा अपनी बहन सोहिनी से मिलने मंदिर की ओर जाता है, जो पुजारी पंडित काली नाथ का शौचालय साफ करने गई है। वह प्रार्थना की धुन से मंत्रमुग्ध हो जाता है और देवता और आरती गा रहे भक्त को देखने के लिए मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ता है। अनजाने में, उसके हाथ जुड़ जाते हैं और वह एक अज्ञात देवता की पूजा में झुक जाता है। एक बार फिर “अपवित्र, प्रदूषित!” की चीखों से वह झटके से वास्तविकता में वापस आ जाता है। भक्त उसकी ओर मुड़ते हैं, इशारे करते हैं और उस पर चिल्लाते हैं। भयभीत और मुश्किल से जवाब में एक शब्द भी बोल पाने में सक्षम, वह अपनी बहन सोहिनी को आँखों में आँसू के साथ, चिल्ला रहे पुजारी के पीछे पाता है। सोहिनी उसे बताती है कि कैसे पुजारी ने उसे व्यंग्यात्मक सुझाव दिए और जब वह आँगन में झाड़ू लगा रही थी, तो उसे उसकी छाती से पकड़ लिया। क्रोधित बखा लंबे कदमों से उस दुबले-पतले पाखंडी अपराधी की ओर बढ़ते हैं जो बिना देर किए अपनी बेबाक एड़ियाँ दिखा देता है। भक्त भी पिघलकर दूर जाने लगते हैं।

अपनी बहन को घर भेजकर, बखा भोजन इकट्ठा करने के लिए शहर की संकरी गलियों की ओर बढ़ता है। उसे साधुओं को हार्दिक भोजन परोसने वाली धर्मपरायण महिलाओं द्वारा जूठा खाना भी नहीं दिया जाता है। विशेष रूप से एक महिला गली में उसके खड़े होने पर एक रोटी नीचे फेंक देती है, इस डर से कि अगर बखा उसकी सीढ़ियाँ चढ़ गया तो उसका घर अपवित्र हो जाएगा। टूटा हुआ और प्रताड़ित, वह अपने ऊपर फेंके गए कुछ टुकड़ों के साथ अपने घर पहुँचता है और अपने पिता को अपना दुख बताता है। उसके पिता उसे सांत्वना देते हैं और कहते हैं, “हमारे वरिष्ठ हैं। वे वास्तव में दयालु हैं। हमें यह समझना चाहिए कि यह धर्म है जो उन्हें हमें छूने से रोकता है!”

हालाँकि, यह सांत्वना बखा पर व्यापक रूप से लागू होती है और उसे लगता है कि दोपहर में, बखा अपनी नई हॉकी स्टिक के साथ हॉकी मैच खेलने जाता है। वह गोल करता है और जोरदार तालियाँ बटोरता है। मैच तब रद्द हो जाता है जब दोनों टीमों झगड़ती हैं और एक-दूसरे पर ईंट-पत्थर फेंकती हैं। बखा हेड क्लर्क के बेटे को घायल देखता है और उसे अपने घर ले जाता है। हेड क्लर्क की पत्नी उस पर न केवल उसके घर को अपवित्र करने बल्कि उसके बेटे को भी घायल करने का आरोप लगाती है। निराश होकर, बखा उसके घर जाता है जहाँ उसे एक गुस्सैल पिता का सामना करना पड़ता है जो उसे स्कूल न जाने के लिए गालियाँ दे रहा होता है। जब पिता उसे शारीरिक बल का प्रयोग करने की धमकी देता है, बखा भाग जाता है और साल्वेशन आर्मी के कर्नल हचिन्सन से टकरा जाता है, जो उसे ईसाई धर्म में परिवर्तित करने की उम्मीद कर रहा है। मिशनरी से भ्रमित लेकिन अभी भी एक जोड़ी सफेद पतलून पाने की उम्मीद रखते हुए, वह उसका पीछा करता है लेकिन मिशनरी के दुर्जेय साथी के अचानक प्रकट होने पर वह डर जाता है और भाग खड़ा होता है। जल्द ही वह खुद को भीड़ में पाता है और गांधीजी को हिंदू समाज से



अस्पृश्यता मिटाने का आह्वान करते हुए सुन रहा है। व्याख्यान सुनकर बखा रोमांचित हो जाता है और जब व्याख्यान समाप्त होता है, तो वह भीड़ के बीच से गुजरता है और उसे युवा कवि इकबाल नाथ सरशार को सुनने का मौका मिलता है, जो भविष्यवाणी करते हैं कि शौचालयों की यांत्रिक सफाई एक नए युग की शुरुआत करेगी और तब अस्पृश्यता का उन्मूलन होगा। इस सुखद क्षण के साथ बखा का दिन और आनंद का उपन्यास समाप्त होता है।

निष्कर्ष

मुल्क राज आनंद के उपन्यास भारतीय समाज के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचे की शक्तिशाली आलोचना प्रस्तुत करते हैं, जो असमानता और उत्पीड़न को बढ़ावा देते हैं। उनका लेखन न केवल शोषित वर्ग के दुखों को उजागर करता है, बल्कि उनके लिए गरिमा और समानता की आवश्यकता को भी प्रकट करता है। आनंद अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण के माध्यम से जातिवाद और उपनिवेशी पूंजीवाद के खिलाफ एक सशक्त आवाज उठाते हैं। उनकी गहरी सहानुभूति और शोषण के खिलाफ संघर्ष आज भी प्रासंगिक हैं। उनके उपन्यास समाज को जागरूक करने और परिवर्तन लाने के उद्देश्य से लिखे गए हैं, और वे साहित्य में सामाजिक और मानवतावादी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने वाले महत्वपूर्ण लेखकों में से एक माने जाते हैं।

संदर्भ

आनंद, मुल्क राज (1935)। अछूत। विशाल पब्लिशर्स।

आनंद, मुल्क राज (1936)। कुली। मैकमिलन।

आनंद, मुल्क राज (1937)। टू लीक्स एंड ए बड। विकास पब्लिशिंग हाउस।

भट्टाचार्य, स. (2020)। भारतीय अंग्रेजी साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद: मुल्क राज आनंद के अछूत और कुली का अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ इंग्लिश लिटरेचर, 12(3), 45–56।

सिंह, के. (2021)। मुल्क राज आनंद के लेखन में मानवतावाद और सामाजिक सुधार। जर्नल ऑफ साउथ एशियाई स्टडीज, 29(2), 72–85।

शर्मा, अ. के. (2019)। मुल्क राज आनंद और भारतीय समाज पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण। स्टडीज इन लिटरेचर एंड सोसाइटी, 22(4), 19–31।

पुरी, स. (2018)। मुल्क राज आनंद का सामाजिक दर्शन और आधुनिक भारतीय साहित्य में उनका प्रभाव। कलिंग यूनिवर्सिटी प्रेस।

बंसल, पी. (2022)। साहित्य को बदलाव का साधन: मुल्क राज आनंद का योगदान। जर्नल ऑफ लिटरेरी स्टडीज, 16(1), 10–23।

कुमार, न. (2017)। मुल्क राज आनंद के अछूत में जाति और वर्ग का चित्रण। स्टडीज इन इंडियन इंग्लिश फिक्शन, 19(1), 35–47।

नायर, आर. (2020)। आनंद और उनका समाज सुधारक दृष्टिकोण: कुली और टू लीक्स एंड ए बड का अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म, 12(3), 58–69।

